कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937

केली की खेती

ज्योति वर्मा[1] और मोहित चौधरी[2]

[1]पुष्प विज्ञानं एवं भृदृश्य निर्माण विभाग, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना
[2]उद्यान विभाग सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश

*संबंधित लेखक: jayothiverma@gmail.com

e-ISSN No. 2583-0937

केली एक बहुवर्षीय गांठदार जड़ों वाला पौधा है, जिसकी ऊंचाई 1.5 से 2.5 मी0 तक होती है। इस का तना शिफा वृन्त के रूप में परिवर्तित हो जाता है जोकि पूर्णतः भूमि के अन्दर पाया जाता है। इसकी जड़ें बधिक गहराई तक न जाकर इधर-उधर फैल जाती है। इसकी खेती क्यारियों तक गमलों में फूल वपत्तियों की सुन्दरता के लिए की जाती हैं। केली की कुछ जातियों का जनम स्थान कोस्टारिका तथा वेस्ट इंडिजक हा जाता है, जहां से यह यूरोप तथा इंगलैंड में पत्तियों की सुन्दरता के लिए उगाई गई। कुछ समय पहले केली का पौधा जंगली अवस्था में था। जिस की पत्तियां कमआकर्षक तथा फूल भी छोटे आकार के मिलते थे। आजकल जो केली हम उत्पन्न करते हैं, जिनकी पत्तियां तथा फूल अधिक सुन्दर हैं, अभिजनन कार्य द्वारा पैदा की गई हैं।

केली की प्रजातियां

केली की लगभग 60 स्पैसीज उष्ण तथा उपोष्ण देशों में पाई जाती हैं, लेकिन निम्नलिखित कुछ स्पैसीज अधिक महत्व की हैं।

कैन्ना इंडिका

इसका पौधा 1 से 1.75 मी0 ऊंचाई का होता है। पतितयां 30-45 से0मी0 लम्बी तथा फूल काफी छोटे आकार के होते हैं।

कैन्ना इरिडीफ्लोरा

पौधा 1.8 से 2 मी0 लम्बा होती है। पत्तियां चमकीली हरी तथा फूल अन्य स्पैसीज से बड़े आकार का मिलता है।

कैन्ना फ्लासिडा

इनका तना 1.2 से 2 मी0 लम्बा हरे रंग का होता है, जिस पर नीचे 20 से0 मी0 लम्बी पत्तियां अधिक मात्रा में पाई जाती हैं। फूल की तरह होता है।

कैन्ना स्पेसीओसा

इसका जन्म स्थान हिमालय तथा पूर्वी इन्डीज कहा जाता है। इस का तना 2 मी0 लम्बा तथा पत्तियां चैडऋी 50 से0 मी0 लम्बी पाई जाती है। इसमें पेटालोएडस्टा मिनोडियादो की संख्या में चमकीले लाल रंग के होते हैं, जिसका लिप पीला तथा उस पर बैंगनी धब्बे पाये जाते हैं।

कैन्ना लाटिफोलिया

इसका पौधा अधिक लम्बाई वाला होता है जोकि 3-5 मी0 का होता है। इसकी उत्पत्ति द0 अमेरिका से हुई। पत्तियां 0.75 से 1 मी0 लम्बी बैंगनी किनारों वाली होती है। लाल रंग का एक टयूब की शक्ल में लिये हुये रहते हैं।

कैन्ना ईडूलीस

इसका जनम स्थान प0 इन्डीया तथा द0 अमेरिका कहा जाता है। ऊंचाई 3 मी0 पत्तियां 0.35-0.75 से0मी0 लम्बी पाई जाती है। पेटालोइडस्टा मिनोडिया लाल या गुलाबी रंग के तीन की संख्या में पाये जाते हैं। इस की शिफावृन्त आकन्द की तरह पाई जाती है, जोकि खाने के काम भी आती हैं।

कैन्ना लिलीफ्लोरा

इसका पौधा 1.5 मी0 से 3.25 मी0 लम्बा होता है जिस पर 1-1.32 मी0 लम्बी पत्तियां पाई जाती हैं।स्टामिनो डिया तीन की संख्या में टयूब की तरह सफेद खुशबूदार होते हैं।

केली के अन्दर पहला हाईब्रिड मोन्सर ऐन्री द्वारा 1848 ई0 में पैदा किया गया। इसका रंग गहरा गुलाबी या लाल पाया जाता है। फूल 5-6 से0मी0 व्यास के तथा पंखडियों की चैडाई लगभग 1.8 से0 मी0 पायी जाती है। भारत वर्ष में भी लखनऊ में क्रोजी केली पर सन् 1890 में कार्य प्रारम्भ किया गया।

मिट्टी तथा जलवायु

केली के लिए उपजाऊ भूमि की आवश्यकता होती है जिसमें कि जलात्सारण का उचित प्रबन्ध हो। वैसे केली की खेती विभिनन प्रकार की मिट्टियों में सम्भव है, लेकिन भुरभुरी दोमट मिट्टी उत्तम होती है। रेतीली या चिकनी मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं रहती है। केली उष्ण या उपोषण प्रदेशीय पौधा है इसलिए इसकी खेती ऐसे स्थानों पर नहीं की जा सकती है जहां पर तापक्रम काफी निम्न पाया जाता है। इस की सफल खेती के लिए 80-100

e-ISSN No. 2583-0937

डिग्री फा0 तापक्रम अच्छा समझा जाता है तथा वर्षा 100-125 से0मी0 प्रति वर्ष। पहाडों के निचले स्थानों पर इसकी खेती सम्भव है, यदि पाले के बचाव का उचित प्रबन्ध किया गया हो।

प्रसारण

केली का प्रसारण बीजया वनस्पतिक ढंग से किया जा सकता है।

बीज द्वारा

बीजों का प्रयोग केवल अभिजनन कार्य के लिए नई जातियां पैदा करने में किया जाता है।

वनस्पतिक प्रसारण

इस विधि के अन्दर केली का प्रसारण भूमि के अन्दर वाले तने से किया जाता है, जिसको शिफावृन्त कहते हैं। शिफावृन्त के ऊपर छोटी-छोटी कलियां होती है जिसमें से प्रत्येक के अन्दर एक नया पौधा पैदा करने की शक्ति पायी जाती है।

भूमि की तैयारी

केली उत्पन्न करने के लिए चुने हुए स्थान को गर्मियों के दिनो में लगभग 0.75 से0 मी0 से 1 मीटर गहरा खोदकर कुछ दिनों के लिए खुला छोड देते हैं। अधिक तापक्रम तथा तेज धूप के कारण मिटटी में उपस्थित हानिकारक कीडे, बीमारियों के कीटाणु तथा खरपतवार इत्यादि पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं। तत्पश्चात् एक गाडी सडी हुई गोबर या कम्पोस्ट की खाद प्रति 5ग्राम 1.75 मी0 जगह के हिसाब से मिटटी में मिला दी जाती है। जमीन में गहरी सिंचाई कर देते हैं जिस से खाद में उपस्थित खरपतवारों के बीच पूर्ण रूप से उग आते हैं। बाद में उनका गोडकर नष्ट कर दिया जाता है तथा भूमि को समतल बना देते हैं।

पौधे लगाना

प्रथम वर्षा होने के उपरान्त जुलाई के महीने में शिफावृन्त तैयार की गई भूमि में लगा दिये जाते हैं। सर्वप्रथम शिफावृन्त को 15 से 30 से0 मी0 लम्बाई में काट दिया जाता है तथा बाद में भूमि के अन्दर इसको 8-10 से0 मी0 गहराई पर 50-75 से0 मी0 की दूरी देकर लगा दिया जाता है। जब तक इनसे नये किल्ले नहीं निकलते हैं, प्रति तीसरे दिन पानी देते रहना चाहिये। केली का पौधा लगाने से तीन माह बाद फूल देना प्रारम्भ कर देता है।

सिंचाई तथा निराई-गुडाई

केली की पत्तियां अधिक चैडी होने के कारण इसके पौधे को कम समय के अन्तर से पानी की अधिक मात्रा कीआवश्यकता होती है। गर्मी के दिनों में 3-4 दिन के अन्तर से तथा जाडों में 7-12 दिन के अन्तर से नियमित रूप से सींचते हैं। वर्षा ऋतु में इसको पानी देने कीआवश्यकता नहीं होती है। केली के पौधे की जडें भूमि की ऊपरी सतह पर ही रहती हैं, अतः गहरी गुडाई करना हानिकारक होता है। खुरपी की सहायता से उथली गुडाई करके खरपतवारो को निकाल देना चाहिए।

खाद

केली के पौधे को अधिक खाद्य पदार्थ की आवश्यकता होती है। अतः इसको काफी खाद देना चाहिये। पौधों की वृद्धि के समय कृत्रिम खाद का निम्न मिश्रण दिया जाता है - 2 हिस्से 5 डव्को मिलाकर मिश्रण को 500-100 ग्राम प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से छिड़क दिया जाता है। इस मिश्रण को वर्ष में कम से

e-ISSN No. 2583-0937

कम तीन बाद छिडकना चाहिए। इस मिश्रण के अतिरिक्त गोबर की द्रवित खाद भी देते हैं।

कटाई-छटाई

केली में किसी कटाई-छंटाई की आवश्यकता नहीं होती है। जब पौधों में वृद्धि हो रही हो, पौधों से सूखी पत्तियां हटा देनी चाहिए। जो शाखायें फूल दे चुकी हों, उनको पौधे से काटकर अलग करते रहना चाहिए। इस क्रिया मै टोकिंग कहा जाता है।

किस्में

लाल स्टेच्यू आफ लिबर्टी, एम्प्रेस आफ इंडिया, हर्बट हूवर प्रेसिडेन्ट ब्लैक नाईट
पीला गोल्डन वैडिंग बटर कपएनचैन्ट्रेस जोन टू लेट एफ्लेम
सफेद यूरेका रेडियो क्वीन
गुलाब रोजीपिंग पेलसेल मोनपिंग क्वीनमेरी

केली की गमलों में खेती

क्यारियों के अतिरिक्त केली को आधे ड्रम काटकर या बडे-बडे गमलों में उगाते हैं। इसके लिए 42 से0 मी0 आकार के गमले प्रयोग में लाये जाते हैं। गमलों में निम्नलिखित खाद का मिश्रण भरते हैं -
2 भाग लाल मिट्टी 2 भाग रेत 2 भाग पत्ती की खादर 2 भाग गोबर की खादर 1 भाग दोमट मिट्टी आधा भाग कोयला मिलाकर, पीसकर व छानकर गमलों में भर देते हैं तथा शिफावृन्त के तीन टुकडे गमले में सम त्रिबाहु त्रिभुज पर लगा दिये जाते हैं बाद में सभी क्रिया यें उपर्युक्त ढंग से ही की जाती है।

केली के रोग

केली का फूल अधिक आकर्षक होने की वजह से चिड़ियों द्वारा विशेष नुकसान पहुंचाया जाता है। टिड्डे भी केली की पत्तियों और फूलों को काटते देखे गये हैं। इसके लिए रासायनिक दवाइयां प्रयोग करनी चाहिये। फफूंदी की रोकथाम के लिए बोर्डो मिश्रण या सल्फर पाउडर प्रयोग करते हैं। भंडारण में शिफावृन्त को फफूंदी की बीमारियों से बचाने के लिए सल्फर, फोरमल्डीहाइड या पोटेशियम पर मैंगनेट का प्रयोग करते हैं।